RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.035

नासिरा शर्मा रचित 'पत्थर गली' में व्याख्यायित पितृसत्तात्मकता का स्वरूप

राखी

पितृसत्तात्मक संस्कृति में स्त्री की समस्याएँ, अस्मिता, अधिकारबोध, दायित्व, आत्मनिर्भरता, यातनाएँ आदि स्त्री जीवन के अछूते संदर्भों को उद्घाटित करने का प्रयास जिन महिला साहित्यकारों ने किया है उनमें नासिरा शर्मा अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखती हैं।

नारी की भावनाओं को प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से इन्होंने समाज में नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की है। समकालीन रचनाकार नासिरा शर्मा ने न सिर्फ स्त्री की समस्याओं का उल्लेख किया है अपितु समाधान भी प्रस्तुत किया है। इनके लेखन की सर्वोपरि विशेषता है सभ्यता, संस्कृति और मानवीय नियति के आत्मबल व अन्तः संघर्ष का संवेदना सम्पन्न चित्रण। इनके कथा साहित्य के सरोकार ग्लोबल है। स्त्री–विमर्श की दृष्टि से इनकी कहानियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन पर प्रेमचन्द, मंटो, तब्स्सुम आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

नासिरा जी ने नारी जीवन के चित्र को व्यापकता से दिखाया है। इन्होंने मुस्लिम जीवन को निकटता से देखा तथा भोगा है। मुस्लिम स्त्रियों के अनेक प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया है। साथ ही इनके कथा संसार में जहाँ एक ओर मुस्लिम संस्कृति की सौन्दर्य–बोध और बारीक कलात्मकता है, वहीं दूसरी ओर उस समाज में बंद हो गए कमरों के भीतर की घुटन और खुली सांस लेने की बेकरारी बड़ी शिद्दत के साथ व्यक्त हुई है।

परन्तु यह पितृसत्तात्मकता और स्त्री के प्रति ओछी सोच न केवल समाज में है बल्कि साहित्य लेखन जैसे पवित्र स्थलों पर भी दिखाई देता है। ''मुस्लिम लेखिकाओं ने साहित्य अंगीकार भले किया किन्तु साहित्य ने उनकी कभी कद्र न की। इस्मत चुगताई ने 'लिहाफ' जैसी कहानी लिखकर कट्टरपंथियों से दुश्मनी ले ली। तसलीमा नसरीन ने कड़वे यथार्थ बयान किए तो उन्हें देश निकाला हो गया। आशा आपराद ने तमाम त्रासदियों के बावजूद एक आत्मकथा लिखने की जुर्रत की।''[1] ''मुस्लिम लेखिकाओं ने धारा के विपरीत दिशा में लेखन कार्य किया है। इनकी रचनाओं में तत्कालीन महिलाओं की दुर्दशा व उनकी समस्याओं को देखा जा सकता है। मंजु के अनुसार 'इस्लाहुन्निसा' किसी महिला द्वारा लिखा गया पहला उपन्यास है, इसकी लेखिका रसिदुन्निसां थीं। लेकिन विडम्बना यह है कि अपनी मौत के 20 साल बाद उन्हें पहली उर्दू महिला उपन्यासकार के रूप में बमुश्किल पहचान मिलता है। इसी प्रकार रूकैया, तसलीमा नसरीन, जाहिदा, हीना, तहमीना, दुर्रानी, इस्मत चुगताई महेरून्निशा परवेज, नासिरा शर्मा आदि हैं। जो अपनी रचनाओं के माध्यम से मुस्लिम समाज की दशा और दिशा को नई दिशा प्रदान की।''[2] जिसमें नासिरा शर्मा अपनी एक अलग पहचान रखती है न सिर्फ अपने देश की महिलाओं की मुद्दा उठाती है बल्कि अन्य देशों की महिलाओं के दर्द को भी बयाँ करती है। ईरान की क्रांति में महिलाओं की भूमिक हो या धर्म व सत्ता के बीच फंसी महिला का दर्द हो। ''वे ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य कला व संस्कृति विषयों की विशेषज्ञ है। ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा भारत के राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ साक्षात्कार बहुत चर्चित है। सृजनात्मक लेखन में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ ही स्वतंत्र पत्रकारिता में भी बहुत अहम काम किया है।''[3] सत्ता में आने के बाद Ayotollah Ruhollah Knomeini से इंटरव्यू लेने वाली प्रथम South Asia महिला नासिरा शर्मा ही थी।''[4]

इनकी कृतियाँ : गूँगा आसमान, इंसानी नस्ल, संगसार, सबीना के चालीस चोर, इब्ने–मरियम, बुतखाना और दूसरा ताज महल। शमी कागज (वर्तमान ईरानी जन–जीवन पर आधारित कहानी–संग्रह) सात नदियाँ एक समुन्दर (क्रांतिकालीन ईरानी समाज और राजनीति पर आधृत उपन्यास), किस्सा जाम का (खुरासानी लोककथाओं पर आधारित)। उपन्यास : ठीकरे की मँगनी और जिन्दा–मुहावरे, पारिजात (2006) साहित्य अकादमी से पुरस्कृत तथा कुईयांजान (2016) व्यास सम्मान से पुरस्कृत कृतियाँ हैं।

'पत्थर गली' (1986) इनकी प्रथम और सबसे पसंदीदा कहानी संग्रह हैं। इन्होंने इस कहानी संग्रह के बारे में लिखा है– ''यह कहानियाँ धरती पर बसे किसी भी इंसान की हो सकती है क्योंकि दर्द सर्वव्यापी है, फिर भी इन कहानियों की अभिव्यकित का स्रोत एक विशेष परिवेश है।''[5]

''मेरी ये कहानियाँ महाजरत के दुख और मुजरों के सुख का मोहभंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती है जो पत्थर की गली है। इस पत्थर की गली में रहने वाले अपने निकास के लिए छटपटाते नजर आते हैं। अपनी पहचान के लिए तो जद्दोजहद के समुन्दर में गोते लगाते हैं, रूढ़िवादिता की बेड़ियों को तोड़कर खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं। पंखों को पसार कर उसमें सूरज की गर्मी और रोशनी भरने के लिए तड़पते और इस कशमकश में पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो जाते हैं।''[6]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ है– बाबली, सरहद के इस पार, बन्द दरवाजा, कातिब, ताबूत, कच्ची दीवारें, पत्थर गली और सिक्का।

पहली कहानी **'बाबली'** में नायिका सलमा को पानी से भरी बाबली के रूप में दिखाया गया है। विवाह के बाद अनेक वर्षों तक सलमा को कोई सन्तान न होने से पति को दूसरा विवाह करने को मजबूर किया जाता है। दूसरा विवाह सम्पन्न होते–होते पता चलता है कि सलमा गर्भवती है। बावली के प्रतीक के द्वारा सुशिक्षित रूपवती परन्तु अभागी सलमा की व्यथा व्यक्त हुई हैं लेकिन वह अपना स्वतंत्र रास्ता चुनती हैं वह अकेली अपने बच्चे के साथ रहने का फैसला कर पितृसत्तात्मक समाज को मुँह–चिढ़ा देती है। ''पुरुष एक खूबसूरत गुड़िया चाहता है जो हर निर्णय में उस पर निर्भर करे। वह दिखाना चाहता है कि बागडोर उसी के हाथ में है।''[7]

'सरहद के इस पार' में हिन्दू–मुस्लिम घृणा और विद्वेष रूपायित हैं मानव–मानव के बीच भेद पैदा करने वाली विभिन्न स्थितियों में पिसते हुए मानव की कथा है। इस कहानी में नायक 'रेहान' अपनी सरहद अर्थात् अपने देश के प्रति जिसके मन में ममत्व नहीं ऐसी प्रेयसी से नफरत करता है। हिन्दू–मुस्लिम विद्वेष में 'रेहान' अपनी जान पर खेलकर एक हिन्दू लड़की की अपने जातवालों से रक्षा करता है। इस घटना के फलस्वरूप उसे बाद में अपनी जान भी देनी पड़ती है। उसकी हत्या अपने जात वालों के हाथों ही होती है। युवक की बेरोजगारी, मुसलमानों को भी जात–पांत, उच्च–नीच के झूठे–दम्भ पर लेखिका कड़ी चोट करती है।

'बंद दरवाजा' कहानी खानदानी दम्भ, अहंकार की परिपूर्ति के लिए अपने मासूम बच्चों की बलि चढ़ाने वाले तथाकथित प्रतिष्ठित व्यक्तियों के कार्य का पर्दाफाश होता है। काजिम तथा शबाना इस दम्पत्ति के बर्बादी का कारण उन दोनों के पिताओं के मध्य वैमनस्य है। अपने बैर के कारण शबाना के पिता उसे अपने ससुराल नहीं भेजते और काजिम भी अपनी पत्नी से नहीं मिल पाता। अंत में दोनों एक दूसरे के बिना मर जाते हैं। यह सामंती व्यवस्था का चित्रण है। समाज में महिलाएँ कैसे पुरुष के जिद्द का शिकार होती है, इसका वर्णन किया है।

'कातिब' कहानी में शिक्षक, प्रकाशक लेखक और कातिब के स्वार्थ और पक्षपात से परिपूर्ण संबंध निरूपित हुए है। यह कहानी जात–भाईयों से ही शोषित गरीब की व्यथा उजागर होती है। **'कच्ची दीवारें'** एक लम्बी कहानी है। इसमें एक निस्संतान वृद्ध–युगल के अंतिम काल की संघर्ष कथा है साथ ही प्रमुख रूप से दो पीढ़ियों के बीच पनपने वाली शंकालु भावना की टकराहट भी उभरी है। **'ताबूत'** एक हृदय विदारक कहानी है। इसमें पुनः मजबूती और मायूसी के चित्रण हुए है। ऊँचा खानदान और ऊँची और कठोर पाबंदियों की दीवारों में लड़कियों की शारीरिक मानसिक इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और सपने दफन कर दिए जाते हैं।

'सिक्का' एक काव्यात्मक कहानी है, यह उर्दू–फारसी शब्दों से भरपूर है। स्त्री के अंतर्मन प्रेम व आत्मसम्मान के सम्मिलित भावना को काव्यात्मक ढंग से उभारा गया है। वे अपने वजूद के प्रति सतर्क हैं। कहानी के कुछ अंश– ''मेरी वादी में इश्क का एक नया फूल भी खिलना था, इस हकीकत को मैं नहीं जानती थी। मैं तो सिर्फ इतना जानती थी कि इनसानी रिश्ते ही खरे सिक्के होते हैं। मगर बाद में पता चला, मर्द की शक्ल में भी इश्क खनकता खरा सिक्का होता है।''[8]

'पत्थर गली' कहानी मुस्लिम रीतिरिवाज की जकड़ से मुक्त होने के लिए प्रयत्न करने वाली कुछ लड़कियों की कहानी हैं अनेक लाख कोशिश के बाद भी वे हालत के आगे दब जाते हैं। इस समाज में तो लड़का बिना पढ़ाई के भी शान से जीते हैं। लेकिन लड़कियों को सारे दुखों का बोझ उठाना पड़ता है। इस कहानी की लड़कियाँ सभी दृष्टि से योग्य होने पर भी अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती है। वह अपने भाई की सामंती मानसिकता व माँ की रूढ़िवादिता का शिकार हो जाती है। इसकी मुख्य पात्र 'फरीदा' और बड़े भाई की टकराहट पुरानी व नई सोच के साथ आपसी अहं की भी टकराहट थी। फरीदा कहती है : ''इस घर में लगता था कि जाने उसकी आत्मा कहाँ किस पत्थर गली में भटक रही है। जहाँ केवल पत्थर की दीवारें पत्थर की जमीन, पत्थर के छत हैं। यहाँ कोई भी विकास का द्वार नहीं।''[9]

''रूढ़ियों के घटनाओं में ढका हुआ समाज विशेष का, नारी जाति की घुटन बेबसी और मुक्ति की छटपटाहट का, जैसा चित्रण इस कहानी में हुआ है। अन्यत्र दुर्लभ है।''[10]

''औरत कभी बौद्धिक गुणों को प्राप्त करते हुए दिखती है तो इन अक्लमंदों के पास उसकी व्याख्या करने का एक खास तरीका है; वे कहते हैं कि औरत मर्दों के गुण को अपना रही है। औरत अफसर को मर्द के मुकाबले अधिक मेहनत करके अपनी योग्यता प्रमाणित करनी पड़ती है।''[11]

'पत्थर गली' कहानी संग्रह में लेखिका की सामाजिक, धार्मिक गहन अंतर्दृष्टि का परिचय मिलता है। इसके अधिकांश पात्र मुस्लिम है। यह कहानियाँ नारी की जातीय त्रासदी का मर्मान्तक दस्तावेज हैं। पत्थर गली परिधि वह पिछड़ा। समाज है जो आगे बढ़ने के लिए आतुर नजर आता है। इसमें मुसलमानों की भावना आशाएँ और कुंठाएँ शब्द बद्ध हुई हैं। नासिरा जी कहती है– ''आज मुसलमान पात्र जब उभरता है तो या तो हिन्दू–मुसलमान दंगों में या फिर ईद के दिन पढ़ी गयी नमाज और मोहर्रम पर हुए सुन्नी–शिया फसाद में, मगर कौन यह जानने की कोशिश करता कि उसकी कोमल भावनाएँ, उसकी कुण्ठाएँ उसके अरमान और ख़्यालात क्या है?'' वे कहती है– मुस्लिम समाज सिर्फ 'ग़जल' नहीं बल्कि एक ऐसा 'मर्सिया' है जो वह अपनी रूढ़िवादिता की कब्र के

सिरहाने पढ़ता है पर उस साज़ और आवाज़ को कितने लोग सुन पाते हैं, ओर उसका सही दर्द समझते हैं?''[12]

नासिरा शर्मा ने जिस अनुभव जगत को अपनी रचनात्मक के केन्द्र में रखा है, वह उन्हें और उनकी संवेदना को पीढ़ियों और देश–काल के ओर–छोर तक फैला देता है। प्रो. वीरेन्द्र मोहन के शब्दों में– ''नासिरा शर्मा देशकाल के एक व्यापक दायरे में यात्रा करती है और यह कहानियाँ वह सब कहती हैं जो उनमें मौजूद नहीं। मानवीय संवेदना और बुद्धि का तर्क जाल एक द्वंद्व के रूप में निरंतर टकराता हुआ इन कहानियों की अंतर्धारा को एक अलग पहचान भी देती है।''

वहीं कुमार पंकज के अनुसार ''नासिरा शर्मा उन रचनाकारों में है जिन्होंने स्त्री मुद्दा को अपनी कलम का निशाना बनाया है यह सच है कि महिला के दर्द को महिला से बेहतर भला कौन जान सकता है।''[13]

नासिरा जी ने अपने लेख संग्रह 'औरत के लिए औरत' में अपनी पूरी संवेदनशीलता और आत्मीयता के साथ ना केवल देश वरन विदेशों तक की औरतों की समस्याओं को दिशाबद्ध करने का प्रयास किया है। इनहोंने जाग्रत होती स्त्री चेतना में आँधियाँ ही नहीं भरी बल्कि बुद्धिमत्ता से नए रास्ते बनाने का जोश भी भरा। इनकी खुली मानसिकता संतुलित दृष्टि बार–बार स्पष्ट करती है, कि मनोमस्तिष्क चेतना और शक्ति में औरत कमतर नहीं है। वे कहती हैं– ''समाज सिर्फ मर्दों द्वारा नहीं बना बल्कि इसके ताने–बाने में मर्द तथा औरत दोनों का वजूद है, ... मर्द व औरत एक चने की दो दाल हैं, अर्थात् दोनों इंसान का रूप है।''[14] ''कभी–कभी औरत–मर्द के रिश्ते के बीच यह अभिव्यक्ति जज्बात के उन सूक्ष्म तारों को छूती है, जिसे हम 'चाहत' कहते हैं। यह चाहत कभी 'प्रेम' होता है तो कभी रचनात्मक ऊर्जा का भावनात्मक मिलन, जो मात्र इंसानी जज्बा होता है जिसमें सौंदर्यबोध आकर्षण और किसी भाव को एक साथ जीने की तमन्ना होती है।''[15]

वे आज की नस्ल के बारे में कहती हैं– ''आज की नस्लें अपनी अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है उसमें सपनों की सरसराहट, भावुकता की गुदगुदाहट, प्रेम की चाहत नहीं है बल्कि ठोस स्थितियों, संवेदना का निरन्तर शुष्क होते जाना, प्रेम–भाव का स्थाई रूप से किसी भी रिश्ते में न ठहर पाने की खीज और घबराहट भरी जिजीविषा है कि कल क्या होगा?''[16]

वस्तुतः पत्थर गली की कहानियाँ उस समाज ओर परिवेश की कहानियाँ है जो वास्तव में पत्थर गली है जिसे तोड़ना आसान नहीं, मगर एक छटपटाहट है निकास द्वार ढूंढने की और ये कहानियाँ उसी की तस्वीर पेश करती है। पितृसत्तात्मकता के सामने सीना तान कर खड़ी हो जाती है, प्रतिरोध के स्वर मुखरित करने लगती है। और समस्याओं के साथ हल को भी प्रस्तुत करती है। इनकी नायिकाएँ आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छंदता की आड़ में उच्छृंखल नहीं है।

महादेवी वर्मा ने अपनी पुस्तक 'शृंखला की कड़ियाँ' में लिखा है 'आर्थिक स्वतंत्रता के बिना नारी स्वतंत्र नहीं हो सकती। अपनी वर्तमान स्थिति के विरूद्ध जब तक वह स्वयं विद्रोही तेवर के साथ खड़ी नहीं होती तब तक उसका उद्धार संभव नहीं है।''[17]

शताब्दियों से चली आ रही नारी स्वतंत्रता आंदोलन आज भी जारी है। हम एक ओर आधुनिकता मानवता, भूमंडलीकरण आदि शब्दों का इस्तेमाल करते हैं वहीं दूसरी तरफ स्त्री आज भी अपने अधिकार की मांग पर ही खड़ी दिखाई दे रही है। स्त्री स्वतंत्रता और स्त्री आर्थिक रूप से मजबूत हो इसके नाम पर उसके मन मस्तिष्क व शरीर का सिर्फ इस्तेमाल हो रहा। ''भूमंडलीकरण कहता है कि उसके तहत हुआ बाजारों का एकीकरण लैंगिक रूप में तटस्थ है अर्थात् वह मर्दवादी नहीं है। भूमंडलीकरण कहता है नारीवाद की किसी किस्म से कोई ताल्लुक न रखते हुए भी उसने स्त्री के सशक्तिकरण के क्षेत्र में अन्यतम उपलब्धियाँ हासिल की हैं। सवाल यह है कि परिवार, विवाह की संख्या, धर्म और परम्परा को कोई क्षति पहुँचाने का कार्यक्रम अपनाए बिना यह चमत्कार कैसे हुआ? प्रजनन करने या न करने का अधिकार न मिला, न ही उसके प्रति लौकिक पूर्वाग्रहों का शमन हुआ, न ही उसे इतरलिंगी सहवास की अनिवार्यताओं से मुक्ति मिली और न ही उसकी देह का शोषण खत्म हुआ। फिर बाजार ने यह सबलीकरण कैसे कर दिखाया?

वास्तव में आधुनिकतावाद के गर्भ से निकली अधिकतर संस्थाओं और विचारों को पुष्ट करने वाला यह भूमंडलीकरण नारीवाद की उपेक्षा करता है। दरअसल इसका सूत्रीकरण अस्सी और नब्बे के उन दशकों में हुआ जिनमें नारीवाद अपने ही गतिरोधों से जूझ रहा था। इसी जमाने में भूमंडलीकरण ने आधुनिक विचारधाराओं में सिर्फ नारीवाद को ही असफल घोषित किया और इस तरह पूंजीवादी आधुनिकता ने पहली बार पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष का दायित्व पूरी तरह त्याग दिया। कुल मिलाकर भूमंडलीकरण ने औरत की पारम्परिक अधीनस्थ छवि को कायम रखते हुए उसकी सुन्दरता के संस्थागत इस्तेमाल को वैश्विक आयाम प्रदान कर दिया।''[18]

अमृता प्रीतम ने बिल्कुल सटीक बात कही है ''भारतीय मर्द अब भी औरतों को परंपरागत काम करते देखने के आदी हैं। उन्हें बुद्धिमान औरतों की संगत तो चाहिए होती है पर शादी करने के लिए नहीं। एक सशक्त महिला के साथ ही कद्र करना उन्हें अब भी आया नहीं है। मर्द ने औरत के साथ अभी तक सोना ही सीखा है, जागना नहीं, इसलिए मर्द और औरत का रिश्ता उलझनों का शिकार रहता है।''

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूचीः–

[1]. आर्या मंजू, साहित्य में मुस्लिम महिलाओं के मुद्दे, सखी प्रकाशन, भोपाल, पृ. 20
[2]. समकालीन साहित्य में मुस्लिम महिला साहित्यकार : आलेख। अनीश कुमार 28 अप्रैल 2017, विमर्श – और – आलेख 3
[3]. नासिरा शर्मा, कहानी संग्रह 'बुतख़ाना', लोकभारती प्रकाशन
[4]. नासिरा शर्मा, साक्षात्कार, अचला शर्मा, मीटिंग आयातोल्लाह खोमिनी एण्ड द मिस्ट्री बिहाइंड ईरान्स चाइल्ड सोल्जर्स (सिनेइन्क चैनल)
[5]. नासिरा शर्मा, 'पत्थर गली', दो शब्द, राजकमल पेपर बैक्स, चौथा संस्करण 2018
[6]. नासिरा शर्मा – 'पत्थर गली – दो शब्द'
[7]. अभय कुमार दुबे, भूमंडलीकरण का प्रतिभूगोल : पितृसत्ता के नए रूप, राजकमल पेपर बैक्स, पृ. 83
[8]. नासिरा शर्मा, 'पत्थर गली' कहानी 'सिक्का', राजकमल पेपर बैक्स, पृ. 165
[9]. वही, पृ. 144
[10].शर्मा, डॉ. नीलाभ, मुस्लिम कथाकारों का हिन्दी योगदान
[11].अभय कुमार दुबे, भूमंडलीकरण का प्रतिभूगोल, पितृसत्ता के नए रूप, पृ. 85
[12].नासिरा शर्मा – 'पत्थर गली – दो शब्द'
[13].कुमार पंकज, जिन्दगी के असली चेहरे, आजकल पत्रिका
[14].नासिरा शर्मा, 'औरत के लिए औरत' सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002
[15].नासिरा शर्मा, 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ', किताबघर प्रकाशन
[16].नासिरा शर्मा, 'बुतख़ाना', दो शब्द, लोकभारती प्रकाशन
[17].महादेवी वर्मा, 'शृंखला की कड़िया', लोकभारती प्रकाशन
[18].संपादक – अभय कुमार दुबे, राजेन्द्र यादव, प्रभा खेतान, पितृसत्ता के नए रूप : स्त्री और भूमंडलीकरण, राजकमल पेपरबैक्स

RRIJM 2015, All Rights Reserved